अंखियों के झरोखों से मैंने देखा जो सांवरे ...

डॉ. विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

आज हम फ़िल्म जगत की एक ऐसी बहुमुखी प्रतिभा की चर्चा करेंगे जो जन्म से पूरी तरह नेत्रहीन होने के बावजूद हिन्दी सिनेमा के एक बेहद लोकप्रिय संगीतकार, गीतकार और गायक बने, जिन्होंने अपने अद्भुत रचनात्मक गीतों और अपनी मधुर धुनों से लाखों श्रोताओं के दिलों पर अपनी अनूठी छाप छोड़ी, जी हां आप समझ गये होंगे कि हम बात कर रहे हैं रविन्द्र जैन जी की क्योंकि हिंदी फिल्मों में उनकी मिसाल मिलना वाकई मुश्किल है. रवींद्र जैन को 'मन की आंखों से' गीत लिखने वाला कहा जाता है , क्योंकि वे इस दुनिया को संगीत के माध्यम से महसूस करते थे. वे अपने फिल्मी गीतों में लोक संगीत और भजनों का ऐसा अद्भुत मिश्रण प्रस्तुत करते थे,जो सीधे श्रोता के दिल को छू जाते थे.

रविन्द्र जैन का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में हुआ था. वे जन्म से ही दृष्टिहीन थे, लेकिन इस कमी को उन्होंने अपनी प्रतिभा के दम पर कभी बाधा नहीं बनने दिया. उन्होंने बहुत कम उम्र में मंदिरों में भजन गाकर संगीत की शुरुआत की और कोलकाता में संगीत की औपचारिक शिक्षा ली. उनका जीवन शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के लिए ही नहीं अपितु सामान्य व्यक्तियों के लिए भी बड़ा प्रेरणा दायक है.

उनके पिता पंडित इन्द्रमणि जैन संस्कृत के विद्वान और आयुर्वेदाचार्य थे, जिनसे उन्हें साहित्य और संगीत की प्रेरणा मिली. रविन्द्र जैन ने अपने करियर की शुरुआत 1970 के दशक में की और जल्द ही अपनी अलग पहचान कायम कर ली. उनकी संगीत शैली सरल, मधुर और भावनात्मक थी. जब उन्होंने मुंबई पहुंचकर फिल्मी दुनिया में कदम रखा, उस वक्त हिंदी फिल्मों में एसडी बर्मन, सलिल चौधरी, कल्याणजी-आनंदजी, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल जैसे दिग्गज संगीतकारों का दबदबा था, इसके बावजूद रविंद्र जैन ने भारतीय शास्त्रीय व लोक संगीत पर आधारित अपने कर्णप्रिय गीतों से लोगों के दिल में जगह बना ली.

रविंद्र जी अपने उसूलों के बेहद पक्के थे, आपको यह जानकर हैरानी होगी कि एक फिल्म के गानों की रिकॉर्डिंग के दौरान उन्हें सूचना मिली कि उनके पिता जी का निधन हो गया है, इसके बावजूद वो अपना काम खत्म किए बिना वहां से नहीं गये. एक बार उनसे किसी ने सवाल किया कि क्या उनका नेत्रहीन होना फिल्म उद्योग में उनके काम में बाधा डालती है? जिसके जवाब में उन्होंने जवाब दिया 'तन के हिस्से में सिर्फ दो आंखें हैं, मन की आंखें हजार होती हैं .

रविन्द्र जैन ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को भी फिल्मी धुनों में खूबसूरती से पिरोया. उन्होंने 1972 की फिल्म 'कांच और हीरा' से संगीतकार के रूप में शुरुआत की. फिल्म का संगीत काफी पसंद किया गया था, जिसमें 'नजर आती नहीं मंजिल' जैसे लोकप्रिय गीत शामिल थे. 1973 में राजश्री प्रोडक्शंस की अमिताभ बच्चन और नूतन अभिनीत फिल्म 'सौदागर' ने उन्हें स्थापित कर दिया, जिसमें उन्होंने न केवल संगीत दिया बल्कि

फ़िल्म के सारे गीत भी लिखे थे. उन्होंने कई सफल फिल्मों में संगीत दिया, सौदागर, चोर मचाए शोर, गीत गाता चल, चितचोर, फकीरा , चोर मचाये शोर, दुल्हन वही जो पिया मन भाये ,अंखियों के झरोखे से, पति पत्नी और वो, राम तेरी गंगा मैली, हिना ,नदिया के पार, विवाह आदि उनकी प्रमुख फ़िल्में हैं, इन सभी फिल्मों के गीत आज भी श्रोताओं के बीच बहुत लोकप्रिय हैं.

रविन्द्र जैन जी की खास बात यह थी कि वे अक्सर स्वयं अपने गीत लिखते थे और उन्हें संगीतबद्ध भी करते थे इनमें से कई गीत उन्होंने गाये भी हैं . उनकी रचनाओं में भक्ति, प्रेम और भारतीय संस्कृति की गहरी झलक मिलती है. उनके द्वारा संगीतबद्ध कुछ प्रसिद्ध गीत देखिये 'घुँघरू की तरह बजता ही रहा हूं मैं' (चोर मचाए शोर), 'गोरी तेरा गाँव बड़ा प्यारा', 'जब दीप जले आना' (चितचोर), 'ले जाएंगे, ले जाएंगे, दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' (चोर मचाए शोर), 'गीत गाता चल ओ साथी गुनगुनाता चल', 'बचपन हर गम से बेगाना होता है', 'श्याम तेरी बंसी पुकारे राधा नाम' (गीत गाता चल), 'दो पंछी दो तिनके' (तपस्या), 'अंखियों के झरोखों से तूने देखा जो साँवरे' (अंखियों के झरोखों से), 'एक राधा एक मीरा' (राम तेरी गंगा मैली), 'ले तो आए हो हमें सपनों के गांव में', 'अब रंज से ख़ुशी से बहार-ओ-ख़िज़ा से क्या' (दुल्हन वही जो पिया मन भाए), 'दिल में तुझे बिठा के', 'फकीरा चल चला चल' (फकीरा), 'ठंडे-ठंडे पानी से नहाना चाहिए' (पति, पत्नी और वो) , 'सजना है मुझे सजना के लिए?', 'तेरा मेरा साथ रहे', 'हर हसीं चीज का मैं तलबगार हूं' (सौदागर), 'कौन दिशा में ले के चला है', 'जब तक पूरे न हों फेरे सात' (नदिया के पार), 'सुन सायबा सुन, प्यार की धुन' (राम तेरी गंगा मैली) आदि.

फिल्मों के अलावा उन्होंने टेलीविजन के लिये भी उल्लेखनीय योगदान दिया. भारतीय टेलीविज़न के सबसे लोकप्रिय धारावाहिक 'रामायण' में उन्होंने ही संगीत दिया था, सच तो ये है कि उनके गीतों के बिना रामानंद सागर की 'रामायण' भी अधूरी ही रहती. उन्होंने दोनों आंखों से न देख पाने के बावजूद अनेक मधुर गीतों की रचना की, विशेष रूप से 'रामायण' के लिए उनके द्वारा लिखे गये भजन और गीत और उनका संगीत बहुत लोकप्रिय हुए . इस सीरियल के भजन और गीत आज भी बड़ी श्रद्धा के साथ सुने जाते हैं. उनके द्वारा रचित 'मंगल भवन अमंगल हारी', 'राम भक्त ले चला रे राम की निशानी', 'ओ मैया तूने का ठानी मन में', 'जिन पर कृपा राम करें वो पत्थर भी' ने उन्हें भारत के घर घर में मशहूर कर दिया. इसके अलावा उन्होंने 'श्रीकृष्ण', 'दादा-दादी की कहानियां' और 'लव कुश' जैसे मशहूर कार्यक्रमों को भी अपने संगीत से सजाया . उन्होंने रामायण की कई चौपाइयों को भी आवाज़ दी .

इसी प्रकार रविंद्र जैन ने फिल्मों के लिए होली के कई गीत लिखें और उन्हें संगीतबद्ध भी किया. रविंद्र ने फिल्म खून खराबा' के गीत- 'होली आई रे...', 'गोपाल कृष्णा' फिल्म में 'आयो फागुन हठीलो, गोरी चोली पै पीलो रंग डारन दे...', फिल्म 'षड्यंत्र' में 'होली आई होली..हां मस्तानों की टोली, सबके लबों पे प्यार भरी बोली' जैसे गीत गाए. फिल्म 'नदिया के पार' का 'जोगी जी धीरे-धीरे, जोगी जी वाह...जोगी जी' तो आज भी हर होली पार्टी की जान होता है. 'हिना' और 'रामतेरी गंगा मैली' में उनके साथ काम कर चुके प्रसिद्ध निर्माता निर्देशक रणधीर कपूर उनके बारे में बताते हैं कि दादू (रविन्द्र जैन) एक बेहद सृजन शील कलाकार थे, वो शास्त्रीय संगीत के अच्छे ज्ञाता थे, वो जितने अच्छे संगीतकार थे उससे कही बड़े गीतकार थे, हर गीत के लिये वे कम से कम 12 अंतरे तैयार करते थे हमारे लिये उनमें से 3 या 4 अंतरे चुनना बड़ा कठिन काम होता था.

रविन्द्र जैन को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए कई पुरस्कार मिले. उन्हें 1985 में 'राम तेरी गंगा मैली' के लिए फिल्मफेयर सर्वश्रेष्ठ संगीतकार का पुरस्कार और 2015 में उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया. रविन्द्र जैन ने यह सिद्ध कर दिया कि सच्ची प्रतिभा हर शारीरिक बाधा से बड़ी होती है. उनकी मधुर धुनें और भावपूर्ण गीत भारतीय संगीत की अमूल्य धरोहर हैं जो हमेशा हमारे दिलों में रहेंगी .आज के लिये इतना ही,अगले हफ्ते फिर मुलाक़ात होगी, तब तक रविंद्र जैन साहब के मधुर गीतों व भजनों का भरपूर आनंद लीजिये.

विशाल ने अगले प्रोजेक्ट के लिए शुरू की तैयारी

अभिनेता विशाल जेठवा ने अपने अगले प्रोजेक्ट के लिए तैयारी शुरू कर दी है. विशाल जेठवा ने अपने हालिया फिटनेस पोस्ट से लोगों की उत्सुकता बढ़ा दी है. हाल ही में उन्होंने सोशल मीडिया पर अपनी हथेलियों की क्लोज़-अप तस्वीर शेयर की, जिसमें कड़े वर्कआउट की वजह से पड़े छाले और निशान साफ दिखाई दे रहे थे.

सबका ध्यान सिर्फ तस्वीर ने ही नहीं, बल्कि उसके साथ लिखे कैप्शन ने भी खींचा. उन्होंने लिखा, '105 पुल-अप्स. कोई शॉर्टकट नहीं. 40 वज़न (10किलोग्राम), 60 बॉडीवेट, 5 सिर्फ शरीर को जगाने के लिए '

दरअसल, यह ट्रेनिंग विशाल के आने वाले प्रोजेक्ट के लिए है, जिसके लिए वह एक फिजिकली डिमांडिंग रोल की तैयारी कर रहे हैं. अपने काम के प्रति समर्पण के लिए जाने जाने वाले विषाल इस बार खुद को शारीरिक रूप से नई सीमाओं तक ले जा रहे हैं.

अपनी ट्रेनिंग के बारे में बात करते हुए विशाल ने कहा, 'मैं इन दिनों बॉडीवेट ट्रेनिंग और स्ट्रेंथ वर्क का कॉम्बिनेशन कर रहा हूँ, ताकि ओवरऑल फिटनेस और स्टैमिना बेहतर हो सके. मेरा फोकस है लगातार मेहनत करना, धीरे-धीरे ताकत बढ़ाना और हर दिन अपनी लिमिट को आगे बढ़ाना, साथ ही ट्रेनिंग को अनुशासित और स्ट्रक्चर्ड रखना.'

एक करीबी सूत्र के अनुसार, 'विशाल पिछले डेढ़ महीने से अपने ट्रेनर निकेश के साथ जिम में काफी समय बिता रहे हैं. यह ट्रांसफॉर्मेशन उनकी कड़ी और लगातार मेहनत का नतीजा है. उनके शरीर में साफ तौर पर मसल्स बढ़े हैं. यह सब उनके आने वाले प्रोजेक्ट की तैयारी के लिए है, जिसमें इस तरह की इंटेंस ट्रेनिंग की ज़रूरत है.'

'सन ऑफ सरदार 2' से निराश मृणाल

मृणाल ठाकुर ने 'सन ऑफ सरदार 2' के अपने अनुभव को साझा करते हुए कई अहम बातें बताईं, जो फिल्म इंडस्ट्री के काम करने के तरीके पर सवाल खड़े करती हैं. एक्ट्रेस ने कहा कि उन्हें फिल्म साइन करते समय अपने किरदार की पूरी सच्चाई नहीं बताई गई थी. खास तौर पर यह जानकारी कि वह एक सीनियर एक्टर की पत्नी का रोल निभाने जा रही हैं, उनसे छुपाई गई.

मृणाल के अनुसार, यह उनके लिए काफी चौंकाने वाला था क्योंकि उन्होंने इस फिल्म से कुछ और ही उम्मीदें लगाई थीं. जब उन्हें असलियत का पता चला, तब तक बहुत देर हो चुकी थी. इस अनुभव ने उनके विश्वास को प्रभावित किया और वह खुद को उस भूमिका में पूरी तरह सहज महसूस नहीं कर पाईं.

फिल्म की एडिटिंग प्रक्रिया भी उनके लिए निराशाजनक रही. मृणाल ने बताया कि उनके और एक अन्य किरदार के बीच का एक बेहद भावुक सीन, जो कहानी के लिए महत्वपूर्ण था, उसे फिल्म से हटा दिया गया. इस सीन में रिश्तों की गहराई और भावनात्मक जुड़ाव दिखाया गया था, जिसे दर्शकों तक पहुंचना चाहिए था.

उन्होंने इस सीन का जिक्र करते हुए बताया कि इसमें एक बच्ची के साथ उनका गहरा भावनात्मक संबंध दिखाया गया था, जहां वह उसके लिए मां जैसी भूमिका निभाती हैं. यह सीन कहानी के भावनात्मक पहलू को मजबूत करता, लेकिन एडिटिंग के दौरान इसे हटा दिया गया.

फिल्म में अजय देवगन भी अहम भूमिका में हैं, और कहानी में कई रिश्तों के उतार-चढ़ाव दिखाए गए हैं. बावजूद इसके, मृणाल को लगता है कि उनके किरदार के साथ पूरा न्याय नहीं हो पाया.

हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि हर प्रोजेक्ट एक सीख देता है और इस अनुभव से उन्होंने काफी कुछ सीखा है. मृणाल का मानना है कि इंडस्ट्री में कलाकारों के साथ पारदर्शिता बेहद जरूरी है, ताकि वे अपने काम को पूरी ईमानदारी और आत्मविश्वास के साथ निभा सकें.

टेलीविजन हलचल

न्याय, खामोशी और समाज को गहराई से परखती है अस्सी : तापसी पन्नू

सिनेमाघरों में अपने प्रदर्शन के दौरान चर्चा का विषय बनने और समीक्षकों से सराहना प्राप्त करने के बाद, अस्सी अब 17 अप्रैल को हिंदी जी 5 पर अपने डिजिटल प्रीमियर के लिए तैयार है. अनुराग सिन्हा द्वारा निर्देशित और बनारस मीडिया वर्क्स तथा टी-सीरीज़ फिल्म्स द्वारा निर्मित इस फिल्म में तापसी पन्नू, मोहम्मद जीशान अय्यूब, कानी कुसरुति, रेवती, मनोज पाहवा, कुमुद मिश्रा, नसीरुद्दीन शाह, सुप्रिया पाठक और सीमा पाहवा जैसे दमदार कलाकारों की प्रभावशाली टोली नजर आएगी. एक प्रभावशाली कोर्टरूम ड्रामा, अस्सी एक वकील (तापसी पन्नू) की कहानी है, जो एक भयानक दुष्कर्म मामले को लड़ने का निर्णय लेती है और इस प्रक्रिया में न केवल अपराध, बल्कि उससे जुड़ी व्यवस्था की संवेदनहीनता का भी सामना करती है. फिल्म का एक सशक्त दृश्य एक भयावह सच्चाई को उजागर करता है- एक ही दिन में लगभग 80 दुष्कर्म के मामले दर्ज होना-जो फ़िल्म की कहानी की गंभीरता और ज़रूरत को और भी बढ़ा देता है. यह फिल्म एक सर्वाइवर और उसके साथी (कानी कुसरुति और मोहम्मद जीशान अय्यूब) की यात्रा को दर्शाती है, जिनकी जिंदगियाँ हिंसा के कारण बिखर जाती हैं. वे इस दौरान आघात, समाज के कठोर निर्णय और एक निर्दयी कानूनी व्यवस्था से जूझते हैं. बढ़ती यौन हिंसा और न्याय में देरी की सच्चाई पर आधारित अस्सी उन भावनात्मक और सामाजिक परिणामों पर रोशनी डालती है, जिन पर अक्सर खुलकर बात नहीं होती. बेहद सच्ची और बेबाक प्रस्तुति के साथ, यह फिल्म अदालत की सीमाओं से आगे बढ़कर ऐसे अपराधों की मानवीय कीमत को उजागर करती है- वह हिम्मत जिसकी यह मांग करती है और वह खामोशी जिसे यह चुनौती देती है.

जगद्धात्री' को लेकर सायंतनी घोष ने की तारीफ

जगद्धात्री' अपने दमदार ट्विस्ट के साथ दर्शकों को लगातार जोड़े हुए है. हाल के एपिसोड में रुद्र, शिवाय को गोली मार देता है और जगद्धात्री को पता चल जाता है कि इस हमले के पीछे वही है. वह उसे बेनकाब करने की कोशिश करती है, लेकिन सबूत न होने की वजह से नाकाम रहती है, क्योंकि रुद्र हर चीज को बहुत संभलकर छिपा देता है. वहीं दूसरी तरफ माया इन आरोपों को मानने से इनकार कर देती है और अपने भाई के साथ खड़ी रहती है. वह अपने परिवार को टूटने से बचाने के लिए हर हाल में उसका साथ देती है, भले ही उसके दिल में जगद्धात्री और शिवाय के लिए गहरा लगाव क्यों न हो. माया हर हाल में अपने भाई और अपने परिवार के साथ खड़ी रहती है. अपने इस किरदार के बारे में बात करते हुए सायंतनी घोष कहती हैं, 'माया देशमुख का किरदार निभाना मेरे लिए एक एक्टर के तौर पर बहुत खास और सीख देने वाला अनुभव रहा है. मुझे इसमें सबसे ज्यादा यह बात पसंद है कि वह सिर्फ बाहर से मजबूत नहीं है, बल्कि उसके अंदर कई तरह के भाव, उलझनें और अलग-अलग पहलू हैं, जो उसे बहुत सच्चा बनाते हैं. खासकर हाल के एपिसोड में हमने देखा कि माया अपने परिवार को बचाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है, और यह बात मुझसे बहुत जुड़ती है. कई मायनों में मुझे माया में अपनी झलक दिखती है. असल जिंदगी में भी मैं अपने परिवार के लिए हर हाल में खड़ी रहती हूं. उसकी तरह मैं भी मानती हूं कि सही वक्त पर मजबूत बनना जरूरी होता है.

लॉन्च हुआ 'कृष्णावतारम' का भव्य ट्रेलर

भगवान श्रीकृष्ण की दिव्य गाथा को बड़े पर्दे पर जीवंत करने वाली फिल्म 'कृष्णावतारम' का ट्रेलर एक भव्य और आध्यात्मिक माहौल में लॉन्च किया गया, जिसने इसे सिर्फ एक फिल्मी इवेंट ही नहीं, बल्कि आस्था का उत्सव भी बना दिया. यह ऐतिहासिक क्षण श्रीकृष्ण की पावन जन्मस्थली, मथुरा में हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में दर्ज किया गया, जहाँ हर ओर भक्ति और श्रद्धा का अद्भुत संगम देखने को मिला.

ट्रेलर लॉन्च के दौरान श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी, जिसने इस आयोजन को एक सामूहिक आध्यात्मिक अनुभव में बदल दिया. यह अनूठा अनावरण केवल एक स्थान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वृंदावन और मथुरा के कई प्रमुख धार्मिक स्थलों, जैसे रमन रेती मंदिर, राधा रानी मंदिर, प्रेम मंदिर और इस्कॉन वृंदावन तक विस्तारित किया गया. इस तरह 'कृष्णावतारम' का ट्रेलर लॉन्च एक मल्टी-लोकेशन भक्ति आंदोलन का रूप लेता नजर आया.

फिल्म को केवल एक सिनेमाई प्रस्तुति नहीं, बल्कि भक्ति और दिव्य प्रेम की एक सशक्त अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है. ट्रेलर में भगवान श्रीकृष्ण के जीवन की झलक को भव्यता और सौंदर्य के साथ दिखाया गया है, जो दर्शकों को एक आध्यात्मिक यात्रा पर ले जाने का वादा करता है. इसकी सिनेमैटोग्राफी, संगीत और विजुअल्स मिलकर एक ऐसा अनुभव रचते हैं, जो दर्शकों के मन को गहराई से छू सकता है. फिल्म की कहानी प्रसिद्ध लेखक प्रकाश कपाड़िया और राम मोरी ने लिखी है, जबकि सिनेमैटोग्राफी की जिम्मेदारी अयानंका बोस ने संभाली है. संगीत प्रसाद एस ने दिया है, वहीं प्रोडक्शन डिजाइन चोक्कस भारद्वाज का है. कॉस्ट्यूम डिजाइन निधि यशा ने तैयार किए हैं और गीतों के बोल इरशाद कामिल ने लिखे हैं, जो फिल्म की भावनात्मक गहराई को और मजबूत बनाते हैं.

टीवी पर पहली बार 'राहु केतु'

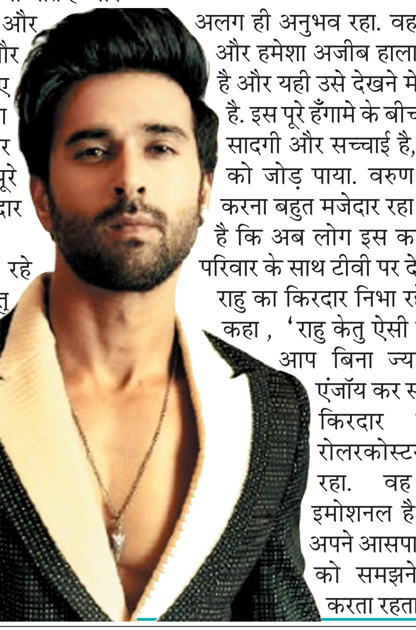

फिल्म 'राहु केतु' का वर्ल्ड टेलीविज़न प्रीमियर 19 अप्रैल को रात आठ बजे ज़ी सिनेमा पर होगा. यह फिल्म दो भोले-भाले लेकिन बेहद प्यारे किरदारों 'राहु' और 'केतु' की कहानी पर केन्द्रित है, जो एक लेखक की जादुई नोटबुक से निकलकर ज़िंदगी में आ जाते हैं और शुरू हो जाती है मस्ती, कॉमेडी और ढेर सारी हँसी. पुलकित सम्राट और वरुण शर्मा द्वारा निभाए गए किरदार फिल्म में चार चाँद लगा देते हैं. ऐसे में, मस्ती, इमोशन और एडवेंचर से भरी यह फिल्म पूरे परिवार के लिए एक मजेदार अनुभव लेकर आती है.

केतु का किरदार निभा रहे पुलकित सम्राट ने कहा, 'राहु केतु उन फिल्मों में से है, जिसमें आप बस खुद को छोड़ देते हैं और मजा लेते हैं. केतु का किरदार निभाना अपने आप में एक अलग ही अनुभव रहा. वह सीधा-सादा है और हमेशा अजीब हालात में फंस जाता है और यही उसे देखने में मजेदार बनाता है. इस पूरे हँगामे के बीच भी केतु में एक सादगी और सच्चाई है, जिससे मैं खुद को जोड़ पाया. वरुण के साथ काम करना बहुत मजेदार रहा और मुझे खुशी है कि अब लोग इस कहानी को अपने परिवार के साथ टीवी पर देख पाएँगे.'

राहु का किरदार निभा रहे वरुण शर्मा ने कहा , 'राहु केतु ऐसी फिल्म है, जिसे आप बिना ज्यादा सोचे बस एंजॉय कर सकते हैं. राहु का किरदार निभाना एक रोलरकोस्टर जैसा अनुभव रहा. वह अलग है, इमोशनल है और हर वक्त अपने आसपास हो रही चीजों को समझने की कोशिश करता रहता है.

चिराग संग सिर्फ दोस्ती : कंगना

कंगना रनौत ने हाल ही में एएनआई को दिए इंटरव्यू में चिराग पासवान के साथ अपने रिश्ते को लेकर खुलकर बात की. लंबे समय से दोनों के बीच अफेयर की खबरें सामने आती रही हैं, लेकिन कंगना ने इन सभी अटकलों को साफ तौर पर खारिज कर दिया.

जब उनसे पूछा गया कि क्या उनके और चिराग के बीच कभी रोमांस रहा है, तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि ऐसा कुछ भी नहीं है. उनके अनुसार, वह चिराग को सिर्फ एक अच्छे दोस्त के रूप में देखती हैं और दोनों के बीच दोस्ती से बढ़कर कोई रिश्ता नहीं है. कंगना ने अपने खास अंदाज में इस मुद्दे को हल्का बनाते हुए कहा कि अगर उनके बीच कुछ होता, तो अब तक उनके बच्चे भी हो चुके होते. उनके इस बयान ने न केवल अफवाहों पर विराम लगाया, बल्कि सोशल मीडिया पर भी हलचल मचा दी.

दरअसल, कंगना रनौत और चिराग पासवान की दोस्ती काफी पुरानी है. दोनों ने साल 2011 में फिल्म मिले ना मिले हम में साथ काम किया था. इसी फिल्म से चिराग पासवान ने बॉलीवुड में कदम रखा था. हालांकि फिल्म बॉक्स ऑफिस पर ज्यादा सफल नहीं रही, लेकिन दोनों के बीच एक मजबूत दोस्ती की शुरुआत जरूर हो गई, जो आज भी कायम है. समय-समय पर दोनों को सार्वजनिक मंचों और राजनीतिक कार्यक्रमों में साथ देखा जाता है, जिससे अफवाहों को और हवा मिलती रही. लेकिन कंगना के इस बयान के बाद अब तस्वीर साफ हो गई है कि यह रिश्ता सिर्फ दोस्ती तक ही सीमित है.